



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 610]
No. 610]

नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 22, 1986/पौष 1, 1908
NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 22, 1986/PAUSA 1, 1908

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Pageing is given to this Part in order that it may be filed as
a separate compilation

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 1986

प्रधिसूचना

सं. 466/86—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

सा. का. नि. 1301(अ).—केन्द्रीय सरकार, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क
और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) की धारा 37 द्वारा प्रवृत्त
शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 1944 में और
संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

- (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क (17वां
संशोधन) नियम, 1986 है।
- (2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।
- केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 1944 में,—
(1) नियम 173B में,—

(i) उपनियम (1) खण्ड (खख) के स्थान पर निम्न-
लिखित खण्ड रखे जाएंगे, अर्थात् :—

“(खख) अंतिम उत्पादों के विनिर्माण में प्रयुक्त किए जाने के लिए
निर्देशों की बाबत गलती से या यह सुनिश्चित करने के लिए
कि समुचित कार्रवाई किए बिना उक्त निर्देशों पर समुचित
शुल्क उसी रूप में संदर्भ किया गया है जैसा कि गेट पास में
या इन नियमों के अधीन अनुमोदित किसी अन्य दस्तावेज में
उपबर्णित है, जो यथास्थिति इनके साथ उत्पाद शुल्क या प्रतिरोधी
शुल्क के संवाय के साक्ष्य स्वरूप है, मुजरा प्राप्त करता है या
ऐसे शुल्क का मुजरा देता है जो वह जानता है या जिसके
बारे में उसे ऐसा विश्वास करने का कारण है कि वह इन
नियमों के अधीन अनुज्ञात नहीं है, या निवेशों का उपयोग
इन नियमों में उपबंधित रीति से नहीं करता है, या इन
नियमों के उपबंधों में से किसी का उल्लंघन करते हुए निवेशों
की बाबत शुल्क के मुजरे का उपयोग करता है, या इन
नियमों के अधीन जैसा अपेक्षित है उसके अनुसार उक्त
निवेशों का प्राप्ति और व्यय और उन पर लिए गए शुल्क के
मुजरे का समुचित और सही हिसाब नहीं देता है या इन
नियमों के अध्याय की धारा कक में अन्तर्विष्ट किन्हीं उपबंधों का
उल्लंघन करता है, या

(खखख) उसके द्वारा हटाए गए माल के लिए जारी किए गए गेट-पास में जानबूझकर कोई गलत या भ्रष्ट विधिष्ठियां इस आशय से दर्ज करता है कि केता ऐसे मालों की बाबत शुल्क के मुजरे का लाभ लेने की सुविधा पा जाए, जो इन नियमों के अधीन अनुज्ञात नहीं है, या;

(ii) उप नियम (1) के पश्चात् निम्नलिखित स्पष्टीकरण अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“स्पष्टीकरण : उपनियम (1) के खख (खख) के प्रयोजनों के लिए किसी व्यक्ति के बारे में, जो उसके द्वारा प्राप्त किए गए निदेशों पर शुल्क के मुजरे का उपयोग करता है, यह समझा जाएगा कि उक्त “युक्तियुक्त कदम” उठाए हैं यदि वह यथास्थिति ऐसे विनिर्माता या प्रदायकर्ता, जो इन नियमों के अधीन अनुमोदित गेट-पास या कोई अन्य दस्तावेज जारी करता है, जो इस बात के साक्ष्यस्वरूप है कि यथास्थिति उत्पादशुल्क या प्रतिरोधी शुल्क का संदाय किया गया है, की पहचान और पते के बारे में अपना समाधान

- (क) या तो अपनी वैयक्तिक जानकारी से, या
- (ख) किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जिसके हस्ताक्षर या हस्तलेख में वह परिचित है, दिए गए प्रमाणपत्र के बल पर, या
- (ग) यथास्थिति विनिर्माता या प्रदायकर्ता को ऐसे केन्द्रीय उत्पादशुल्क अधीक्षक द्वारा, जिसकी अधिकारिता के भीतर विनिर्माता का कारखाना है या प्रदायकर्ता का कारखाना का स्थान है, जारी किए गए प्रमाणपत्र के बल पर कर लेता है :

परन्तु जहाँ प्रमाणपत्र के आधार पर विनिर्माता या प्रदायकर्ता की पहचान और पते का समाधान किया जाता है, वहाँ शुल्क के मुजरे का उपयोग करने वाला व्यक्ति, मांग किए जाने पर समुचित अधिकारी के समक्ष पेश करने के लिए ऐसे प्रमाणपत्र को रखे रहेगा”;

2. नियम 209 में,—

(1) उपनियम (1) में खख (खख) के स्थान पर निम्नलिखित खख रखे जाएंगे, अर्थात् :—

“(खख) अंतिम उत्पादों के विनिर्माण में प्रयुक्त किए जाने के लिए निदेशों की बाबत गलती से या यह सुनिश्चित करने के लिए कि समुचित कार्रवाई किए बिना उक्त निदेशों पर समुचित शुल्क उसी रूप में संदत्त किया गया है जैसा कि गेट-पास में या इन नियमों के अधीन अनुमोदित किसी अन्य दस्तावेज में उपदर्शित है, जो यथास्थिति इसके साथ उत्पाद शुल्क या प्रतिरोधी शुल्क के संदाय के साक्ष्य स्वरूप है, मुजरा प्राप्त करता है या ऐसे शुल्क का मुजरा लेता है जो वह जानता है या जिसके बारे में उसे ऐसा विश्वास करने का कारण है कि वह इन नियमों के अधीन अनुज्ञात नहीं है, या निदेशों का उपयोग इन नियमों में उपबंधित रीति से नहीं करता है, या इन नियमों के उपबंधों में से किसी का उल्लंघन करते हुए निदेशों की बाबत शुल्क के मुजरे का उपयोग करता है, या इन नियमों के अधीन जैसा अपेक्षित है उनके अनुसार उक्त निदेशों की प्राप्ति और ध्यान और उन पर लिए गए शुल्क के मुजरे का समुचित और सही हिसाब नहीं देता है या इन नियमों के अध्याय 5 को धारा कक में अन्तर्विष्ट किन्हीं उपबंधों का उल्लंघन करता है, या

(खखख) उसके द्वारा हटाए गए माल के लिए जारी किए गए गेट-पास में जानबूझकर कोई गलत या भ्रष्ट विधिष्ठियां

इस आशय से दर्ज करता है कि केता ऐसे मालों की बाबत शुल्क के मुजरे का लाभ लेने की सुविधा पा जाए, जो इन नियमों के अधीन अनुज्ञात नहीं है; या”;

(ii) उप नियम (1) के पश्चात् निम्नलिखित स्पष्टीकरण अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“स्पष्टीकरण : उपनियम (1) के खख (खख) के प्रयोजनों के लिए किसी व्यक्ति के बारे में, जो उसके द्वारा प्राप्त किए गए निदेशों पर शुल्क के मुजरे का उपयोग करता है, या समझा जाएगा कि उक्त “युक्तियुक्त कदम” उठाए हैं यदि वह यथास्थिति ऐसे विनिर्माता या प्रदायकर्ता, जो इन नियमों के अधीन अनुमोदित गेट पास या कोई अन्य दस्तावेज जारी करता है, जो इस बात के साक्ष्यस्वरूप है कि यथास्थिति उत्पादशुल्क या प्रतिरोधी शुल्क का संदाय किया गया है, की पहचान और पते के बारे में अपना समाधान

- (क) या तो अपनी वैयक्तिक जानकारी से, या
- (ख) किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जिसके हस्ताक्षर या हस्तलेख में वह परिचित है, दिए गए प्रमाणपत्र के बल पर, या
- (ग) यथास्थिति विनिर्माता या प्रदायकर्ता को ऐसे केन्द्रीय उत्पादशुल्क अधीक्षक द्वारा, जिसकी अधिकारिता के भीतर विनिर्माता का कारखाना है या प्रदायकर्ता का कारखाना का स्थान है, जारी किए गए प्रमाणपत्र के बल पर कर लेता है :

परन्तु जहाँ प्रमाणपत्र के आधार पर विनिर्माता या प्रदायकर्ता की पहचान और पते का समाधान किया जाता है, वहाँ शुल्क के मुजरे का उपयोग करने वाला व्यक्ति, मांग किए जाने पर समुचित अधिकारी के समक्ष पेश करने लिए ऐसे प्रमाणपत्र को रखे रहेगा”।

[फा. सं. 211/36/86-सी. एक्स. 6]

अजय कुमार प्रसाद, अवर सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 22nd December, 1986

NOTIFICATION

No. 466/86-Central Excises

G.S.R. 1301(E).—In exercise of the powers conferred by section 37 of the Central Excises and Salt Act, 1944 (1 of 1944), the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Central Excise Rules, 1944, namely :—

1. (1) These rules may be called the Central Excise (17th Amendment) Rules, 1986.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Central Excise Rules, 1944,—

(1) in rule 173-Q,—

(i) in sub-rule (1), for clause (bb), the following clauses shall be substituted

namely :—

“(bb) takes credit of duty in respect of input for being used in the manufacture of final products wrongly or without taking reasonable steps to ensure that appropriate duty on the said input has been paid as indicated in the gate-pass or any other document approved under these rules evidencing the payment of excise duty or the countervailing duty, as the case may be, accompanying thereof, or takes credit of duty which he knows or which he has reason to believe, is not permissible under these rules, or does not utilise the inputs in the manner provided for in these rules, or utilises credit of duty in respect of inputs in contravention of any of the provisions of these rules, or does not render proper and true account of the receipt and disposal of the said inputs and the credit of duty taken thereon as required under these rules, or contravenes any of the provisions contained in Section AA of Chapter V of these rules; or (bbb) enters wilfully any wrong or incorrect particulars in the gate-pass issued for the goods removed by him with intent to facilitate the buyer to avail of credit of the duty in respect of such goods which is not permissible under these rules; or”;

(ii) after sub-rule (1), the following Explanation shall be inserted, namely :—

“Explanation : For the purposes of clause (bb) of sub-rule (1), a person availing of credit of duty on inputs received by him shall be deemed to have taken “reasonable steps” if he satisfied himself about the identity and address of the manufacturer or supplier, as the case may be, issuing the gate-pass or any other document approved under these rules evidencing the payment of excise duty or the countervailing duty as the case may be, either—

(a) from his personal knowledge; or

(b) on the strength of a certificate given by a person with whose handwriting or signature he is familiar; or,

(c) on the strength of a certificate issued to the manufacturer or the supplier, as the case may be, by the Superintendent of Central Excise within whose jurisdiction such manufacturer has his factory or the supplier has his place of business :

Provided that where the identity and address of the manufacturer or the supplier is satisfied on the strength of a certificate, the person availing of credit of duty shall retain such certificate for production before the proper officer on demand;

(2) in rule 209,—

(i) in sub-rule (1), for clause (bb), the following clauses shall be substituted namely :—

“(bb) takes credit of duty in respect of inputs used in the manufacture of final products wrongly or without taking reasonable steps to ensure that appropriate duty on the said inputs has been paid as indicated in the gate-pass or any other document approved under these rules evidencing the payment of excise duty or the countervailing duty, as the case may be, accompanying thereof, or takes credit of duty which he knows, or which he has reason to believe, is not permissible under these rules, or does not utilise the inputs in the manner provided for in these rules or utilises credit of duty in respect of inputs in contravention of any of the provisions of these rules, or does not render proper and true account of the receipt and disposal of the said inputs and the credit of duty taken thereon as required under these rules, or contravenes any of the provisions contained in Section AA of Chapter V of these rules, or

(bbb) enters wilfully any wrong or incorrect particulars in the gate-pass issued for the goods removed by him with intent to facilitate the buyer to avail of credit of the duty in respect of such goods which is not permissible under these rules; or”;

(ii) after sub-rule (1), the following Explanation shall be inserted, namely :—

“Explanation : For the purposes of clause (bb) of sub-rule (1), a person availing of credit of duty on inputs received by him shall be deemed to have taken “reasonable steps” if he satisfies himself about the identity and address of the manufacturer or supplier, as the case may be, issuing the gate pass or

any other document approved under these rules evidencing the payment of excise duty or the countervailing duty, as the case may be, either—

- (a) from his personal knowledge; or
- (b) on the strength of a certificate given by a person with whose handwriting or signature he is familiar; or;
- (c) on the strength of a certificate issued to the manufacturer or the supplier, as the case may be, by the Super-

intendent of Central Excise within whose jurisdiction such manufacturer has his factory or the supplier has his place of business :

Provided that where the identity and address of the manufacturer or the supplier is satisfied on the strength of a certificate, the person availing of credit of duty shall retain such certificate for production before the proper officer on demand".

[F. No. 211/36/86-CX. 6]
A. K. PRASAD, Under Secy.